विकास महोत्सव का आयोजन

तेरापंथ के विकास का प्रतीक है यह महोत्सव : आचार्य महाश्रमण

आचार्यश्री ने की 2013 का चतुर्मास लाडनूं में करने की घोषणा

सरदारशहर 16 सितज़्बर, 2010

तेरापंथ धर्मसंघ में प्रारंभ से ही अनुशासन, मर्यादा का महत्व रहा है। पूर्व दस आचार्यों ने अनुशासन, मर्यादा को कायम रखने का प्रयास किया। हम भी ऐसा प्रयास कर रहे हैं। अनुशासन मर्यादा की अक्षुण्णता के साथ विकास का क्रम भी चलता रहे, इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने विकास महोत्सव की शुरूआत की। विकास महोत्सव तेरापंथ के विकास का प्रतिक है।

उक्त विचार आचार्य महाश्रमण ने स्थानीय तेरापंथ भवन में आयोजित विकास महोत्सव पर विशाल जनमेदनी को संबोधित करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि मेरे सामने अनेक गतिविधियां है। उनमें सबसे पहले स्थान पर धर्मसंघ है। यह हमारा परिवार है। परिवार का ध्यान रखना पहला कर्त्तव्य होता है। तेरापंथ अक्षुण्ण बना रहे, मर्यादा और अनुशासन के प्रति निष्ठा रहे, हमें ऐसा प्रयास करना है। उन्होंने कहा कि आचार्य और युवाचार्य दोनों अभिन्न होते हैं। युवाचार्य के निर्देश को भी सज़्मान देते हुए स्वीकार करना चाहिए।

आचार्य महाश्रमण ने कल लाडनूं, बीदासर, छापर वासियों द्वारा हुई अर्ज का उल्लेख करते हुए कहा कि मेरे पास दो चतुर्मास हैं मांग चार स्थानों से आ रही है। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष सामने है, उस पर लाडनूं का हक बनता है, छापर में 2012 का चतुर्मास घोषित था पर हमने वह वापिस ले लिया। इनकी पूरजोर अर्ज है, बीदासर वालों में ज़ी बहुत जोश है, इनको तो समझा पाना भी कठिन हो जाता है। मैं आज द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव एवं स्वास्थ्य की अनुकूलता को ध्यान में रखते हुए 2013 का चतुर्मास जैन विश्व भारती लाडनूं में करने का भाव रखता हूं और बीकानेर संभाग में जब कभी भी चातुर्मास करने का अवसर आयेगा तो पहला चतुर्मास छापर और दूसरा चतुर्मास बीदासर करने का भाव रखता हूं।

इस मौके पर साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा, मुज़्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा, वरिष्ठ श्रावक कन्हैयालाल छाजेड़, चातुर्मास व्यवस्था समिति के महामंत्री रतन दुगड़ ने विचार व्यक्त किये। मुमुक्षु बहिनों ने मंगलाचरण किया। आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान गंगाशहर द्वारा प्रकाशित 'प्रस्तव' के संदर्भ में पर्यावरणविद शुभू पटवा ने विचार रखे। प्रतिष्ठान के कार्यकर्त्ताओं ने स्मारिका प्रस्तुत की प्रथम प्रति आचार्यप्रवर को भेंट की। संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

15 दीक्षार्थियों की निकली विशाल शोभा यात्रा

सरदारशहर 16 सितज़्बर, 2010

आचार्य महाश्रमण के हाथों आज जैन भागवती दीक्षा ग्रहण करने वाले 15 दीक्षार्थियों की विशाल शोभायात्रा शहर के मुज़्य मार्गों से निकाली गई। आचार्य महाप्रज्ञ चातर्मास व्यवस्था समिति द्वारा आयोजित इस शोभा यात्रा में तेरापंथ सभा, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ महिला मण्डल, तेरापंथ कन्या मण्डल, तेरापंथ किशोर मण्डल, ज्ञानशाला के कार्यकर्त्ता अपने-अपने गणवेश में कतारबद्ध चल रहे थे। प्रत्येक दीक्षार्थियों के साथ उनके पारिवारिकजन सहित हजारों श्रावक-श्राविकाएं जुलूस में सज़्मलित हुए। बैण्डों पर बजती आध्यात्मिक गीतों की धुन, जयकारों से गुंजता आकाश, फिजाओं में धड़कती वैराग्य की ऊर्जा मानों पूरे विश्व को संयम, त्याग, अहिंसा का संदेश दे रही थी। श्रीसमवसरण (पुराने ठिकाने) से प्रारंभ हुई शोभायात्रा, मैन बाजार, जैन मार्ग, घण्टाघर होते हुए तेरापंथ भवन पहुंची। जहां पर आचार्य महाश्रमण ने शोभा यात्रा में उमड़ी भीड़ को मंगल पाठ का श्रवण कराया एवं दीक्षार्थियों को दर्शन दिये।

आज होगा विराट जैन भागवती दीक्षा महोत्सव

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में आज (17 सितज़्बर) प्रात: 9 बजे बीकानेर रोड स्थित बहादुरसिंह कॉलोनी के सामने रावतमल सैनी की जगह पर विराट दीक्षा महोत्सव का आयोजन होगा। उक्त जानकारी देते हुए मुनि जयंतकुमार ने बताया कि दीक्षा आत्मा से परमात्मा बनने का मार्ग है। संयम को स्वीकार करना, घर परिवार की मोह माया को त्यागना महान कार्य है। उन्होंने बताया कि दीक्षा महोत्सव में सरदारशहर के मुमुक्षु शुभम, मुमुक्षु ललिता, बाड़मेर जिले के पचपदरा की मुमुक्षु अनीता, मुमुक्षु रेखा, मुमुक्षु कीर्ति, मुमुक्षु अल्पा, बाड़मेर जिले के बायतु की मुमुक्षु मीना, सुजानगढ़ की मुमुक्षु सोनम, राजलदेसर की मुमुक्षु मधु, राजसमंद जिले के रीछेड़ की मुमुक्षु निकिता, लाडनूं की मुमुक्षु शिखा, नोखा की मुमुक्षु नन्दा, श्रीडूंगरगढ़ की मुमुक्षु सुमेन, चैन्नई की मुमुक्षु मीना, महाराष्ट्र के जालना की मुमुक्षु श्वेता आदि 15 दीक्षार्थियों को आचार्य महाश्रमण जैन भागवती दीक्षा प्रदान करेंगे। दीक्षा के बाद नवीन (नया) नामकरण, केशलोच आदि संस्कारों से सज़्पन्न कराया जायेगा।

आचार्य महाश्रमण ने किया बहुश्रुत परिषद का गठन

परिषद धर्मसंघ के महत्वपूर्ण मुद्दों पर करेगी चिंतन-मंथन

आचार्य महाश्रमण ने विकास महोत्सव के महत्वपूर्ण अवसर पर धर्मसंघ की विस्तृत गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए बहुश्रुत परिषद् का गठन किया। आचार्य महाश्रमण ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञजी की अनुशासना में अनुशासन संहिता का निर्माण किया गया था। उसमें प्रज्ञा परिषद् के गठन, उसके कार्यों एवं सदस्यों की संज़्या पर विचार किया गया, पर सदस्यों के रूप में नामों की घोषणा की प्रक्रिया शेष थी। आज मैं उस प्रक्रिया को सज़्पन्न कर रहा हूं। आचार्य महाश्रमण ने बहुश्रुत परिषद् में मुनियों की तरफ मुनि सुमेरमल 'लाडनूं', मुनि राजकरण, मुनि दुलहराज को एवं साध्वियों की तरफ से साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा, मुज़्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा, साध्वी राजीमती, साध्वी कनकश्री को मनोनीत किया। उन्होंने कहा कि बहुश्रुत परिषद धर्मसंघ के महत्त्वपूर्ण मुद्दों, तत्त्वों पर चिंतन मंथन करेगी।

मुनि कुमार श्रमण एवं मुनि योगेश को बक्शीष

आचार्य महाश्रमण ने इस अवसर पर अपनी परिचर्या में नियुक्त मुनि कुमार श्रमण एवं मुनि योगेश कुमार को समुच्चय के कार्यों से मुक्त कर बक्शीष दी। उन्होंने कहा कि आचार्य का काम होता है संघ की सारणा-बारणा करना। जिसकी गलती हो उसको अंगुली निर्देश और जिसने अच्छा कार्य किया हो, सेवा की हो, उसको प्रोत्साहित करना हमारा दायित्व है। आज उसी दायित्व का निर्वाह करते हुए दोनों मुनियों को बक्शीष देता हूं।

चुनिंदे श्रावकों को संबोधन दिया

आचार्य महाश्रमण ने विकास महोत्सव पर विभिन्न क्षेत्रों के चुनिंदे श्रावकों को संबोधन प्रदान किये। उन्होंने सरदारशर के श्रीचंद बोथरा, पाली के भंवरलाल धोका एवं सोहनलाल चौपड़ा को श्रद्धानिष्ठ श्रावक के संबोधन से संबोधित किया। लाडनूं के हनुमानमल बैंगानी को शासनसेवी संबोधन प्रदान किया। श्राविका समाज में सरदारशहर की झणकारदेवी दुगड़ एवं लक्ष्मीदेवी पींचा, गुलाबदेवी कोठारी को श्रद्धा का प्रतिमूर्ति संबोधन प्रदान किया। बालोतरा निवासी अज़्मादेवी सालेचा को तपोनिष्ठ श्राविका के संबोधन से संबोधित किया।

– **शीतल बरड़िया** (मीडिया संयोजक)